Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

राम का जीवन और आज का युवा

लेखक

पीयूष कुमार दुबे[1], डॉ. विनय विश्वास[2]

सह-लेखक

चिराग वर्मा[3], तुषार[4], रोहन कुमार[5], करिश्मा[6], लोकेश[7], राज पटेल[8]

(यह शोध रिसर्च एंड इनोवेशन सेल, कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा वित्तपोषित है।)

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

शोध सार

यह शोध आलेख, आधुनिक युवा पीढ़ी के जीवन-संघर्ष, मानसिक तनाव, नैतिक संकट तथा सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में श्रीराम के आदर्शों की प्रासंगिकता का अध्ययन करता है। भारतीय सांस्कृतिक चेतना में श्रीराम केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं, अपितु मर्यादा, धैर्य, त्याग, सत्यनिष्ठा, समावेशिता और नेतृत्व के जीवंत प्रतीक हैं। वर्तमान समय में जब युवा वर्ग करियर की प्रतिस्पर्धा, डिजिटल दुनिया के नकारात्मक प्रभावों, परस्पर तुलना की

[1] सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय

[2] आचार्य, हिंदी विभाग, कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय

[3] छात्र, बी.ए. हिंदी (ऑनर्स), तृतीय वर्ष, कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय

[4] छात्र, बी.ए. हिंदी (ऑनर्स), तृतीय वर्ष, कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय

[5] छात्र, बी.ए. हिंदी (ऑनर्स), तृतीय वर्ष, कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय

[6] छात्र, बी.ए. हिंदी (ऑनर्स), तृतीय वर्ष, कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय

[7] छात्र, बी.ए. हिंदी (ऑनर्स), तृतीय वर्ष, कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय

[8] छात्र, बी.ए. हिंदी (ऑनर्स), तृतीय वर्ष, कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

होड़, पारिवारिक विघटन और मानसिक दबाव जैसी अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है, ऐसे समय में श्रीराम का जीवन युवाओं को आत्म-संयम, कर्तव्यबोध, संबंधों की मर्यादा, निर्णय-क्षमता तथा विपरीत परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने की प्रेरणा देने का स्रोत हो सकता है।

आज के अधिकांश युवा नैतिक मूल्यों के क्षरण, पारिवारिक दूरी और मानसिक तनाव को गंभीर समस्या मानते हैं तथा आदर्श चरित्रों के जीवन-मूल्यों को समाधान के रूप में स्वीकार करते हैं। अतः श्रीराम का जीवन आज के युवा के लिए किस प्रकार केवल सांस्कृतिक धरोहर न होकर एक व्यावहारिक जीवन-दृष्टि बनता है, यही प्रश्न इस शोध आलेख का मुख्य विचार-बिंदु है।

बीज शब्द **:** राम, युवा, मर्यादा, नैतिक मूल्य, मानसिक तनाव, पारिवारिक संबंध, कर्तव्यबोध, भारतीय संस्कृति, जीवन-दृष्टि

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में श्रीराम का जीवन केवल एक पौराणिक गाथा नहीं, अपितु आदर्शों, नैतिक मूल्यों और नेतृत्व का एक कालातीत प्रतीक है। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं, “वाल्मीकि रामायण से लेकर निराला तक राम के जीवन में एक समान विशेषता देखने के लिए मिलती है। वह है ‘अविरल संघर्ष’।”[1] संघर्ष और मर्यादा दोनों ही राम के जीवन की विशिष्टता हैं। उनके व्यक्तित्व में मर्यादा, सत्यनिष्ठा, त्याग, सहनशीलता और संगठन कौशल जैसी विशेषताएँ समाहित हैं।

समाज आधुनिकता की ओर तेजी से बढ़ रहा है, परंतु इस प्रक्रिया में मानवीय और नैतिक मूल्य पीछे छूटते जा रहे हैं। ईश्वरीय तत्व पूजा घरों तक सीमित होता जा रहा है। वर्तमान युवा पीढ़ी आजीविका की प्रतिस्पर्धा, मानसिक तनाव और बदलते सामाजिक मूल्यों के दबाव से जूझ रही है। संवेदना शब्द किताब मात्र का हिस्सा बनकर रह गया है। तुलसीदास के अनुसार, “कलियुग का सबसे बड़ा लक्षण कपट और मिथ्या आचरण है।”[2] इसी प्रकार

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

यह भी कहा गया है कि आज "शिक्षा संस्कार के लिए नहीं, अपितु पेट भरने के लिए सीखी जाती है।"[3] ये सभी कथन वर्तमान सामाजिक यथार्थ की ओर संकेत करते हैं, जहाँ कथन और आचरण के बीच दूरी बढ़ती जा रही है।

ऐसे परिवेश में श्रीराम का व्यक्तित्व विशेष रूप से प्रासंगिक हो उठता है। वे मर्यादा और विवेक के प्रतीक हैं, साथ ही अपनी परिस्थितियों की गहन समझ रखने वाले एक संतुलित व्यक्तित्व भी हैं। यदि उनके जीवन का अवलोकन किया जाए, तो स्पष्ट होता है कि संघर्ष उनके जीवन का स्थायी तत्व रहा है, किंतु उस संघर्ष में भी उन्होंने मर्यादा और संतुलन का त्याग नहीं किया। '…रामचन्द्र शुक्ल ने राम को शील, शक्ति और सौन्दर्य का समन्वित रूप कहा है।'[4] वस्तुतः राम का व्यक्तित्व केवल शक्ति या आदर्श का नहीं, एक संतुलित मानवीय संवेदना का भी प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी इस समय को अत्यावश्यकता है। प्रस्तुत शोध-पत्र इस प्रश्न की पड़ताल करता है और यह समझने का प्रयास करता है कि आज का युवा, अपनी जटिल समस्याओं के बीच, श्रीराम के जीवन से क्या ग्रहण कर सकता है।

इस शोध आलेख में विषय की प्रकृति एवं उद्देश्यों के अनुरूप बहुआयामी शोध पद्धतियों का उपयोग किया गया है, जिनमें प्रमुखतः सर्वेक्षणात्मक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धतियाँ सम्मिलित हैं। इन पद्धतियों के समन्वित प्रयोग से अध्ययन को व्यापकता, वस्तुनिष्ठता तथा गहनता प्रदान की गई है।

सर्वेक्षणात्मक पद्धति के अंतर्गत इस विषय के अध्ययन हेतु एक प्रश्नावली तैयार की गई, जिसके माध्यम से 406 उत्तरदाताओं से विचार प्राप्त किए गए। इन उत्तरदाताओं में मुख्यतः युवा वर्ग सम्मिलित है, जिससे यह अध्ययन समकालीन युवा-मानस को समझने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त सिद्ध होता है।

प्रश्नावली में ऐसे प्रश्न शामिल किए गए, जिनका संबंध युवाओं की दृष्टि में श्रीराम की पहचान, रामायण/रामचरितमानस से उनका जुड़ाव, मानसिक तनाव के कारण, पारिवारिक

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

दायित्वों से दूरी, तथा आधुनिक जीवन में राम के आदर्शों की उपयोगिता से था। प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण करके उनके आधार पर निष्कर्ष निर्मित किए गए हैं।

साथ ही, विषय की सांस्कृतिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने के लिए रामचरितमानस, वाल्मीकि रामायण तथा राम-संबंधी आलोचनात्मक विचारों का सहारा लिया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में परंपरागत ग्रंथाधारित दृष्टि और आधुनिक सर्वेक्षण आधारित विश्लेषण, दोनों का समन्वय करने का प्रयास किया गया है।

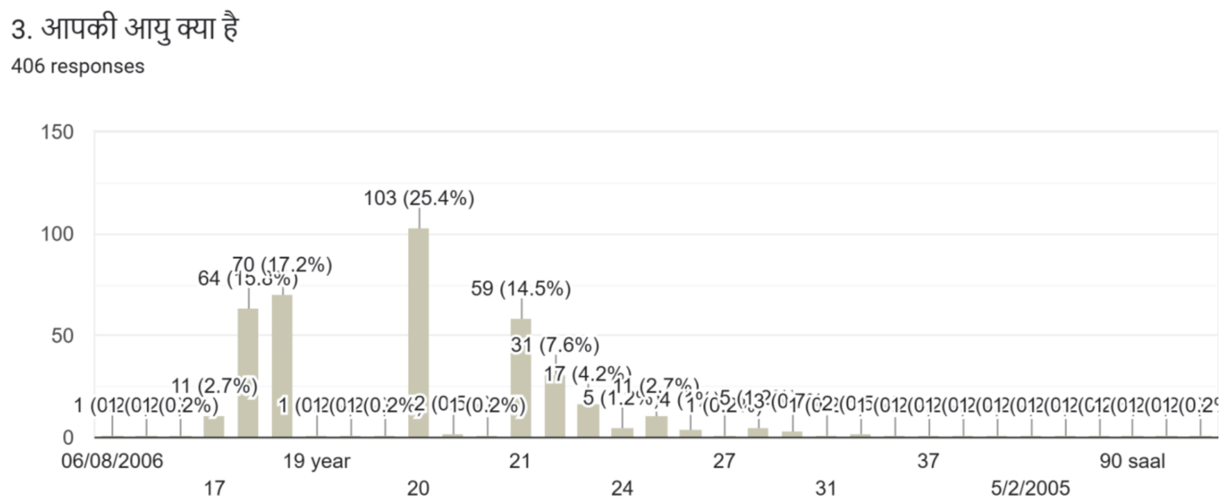

<u>उत्तरदाताओं का आयु-आधारित विश्लेषण</u>

सर्वेक्षण में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि अधिकांश प्रतिभागी 18 से 22 वर्ष के मध्य के हैं। इनमें 20 वर्ष आयु वर्ग के उत्तरदाता सर्वाधिक रहे हैं, जो कुल संख्या का 25.8 प्रतिशत है। इसके बाद 19 वर्ष (17.2%), 18 वर्ष (15.7%), 21 वर्ष (14.7%) तथा 22 वर्ष (7.3%) आयु वर्ग के उत्तरदाता हैं।

इस आयु-वर्ग की प्रमुख विशेषता यह है कि यह संक्रमणकालीन अवस्था में स्थित होता है, जहाँ एक ओर किशोरावस्था से निकलकर व्यक्ति वयस्कता की ओर अग्रसर होता है, वहीं

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

दूसरी ओर वह सामाजिक उत्तरदायित्वों, शैक्षिक प्रतिस्पर्धा, करियर की अनिश्चितताओं तथा मानसिक दबावों से भी जूझ रहा होता है। इस दृष्टि से इस वर्ग की प्रतिक्रियाएँ न केवल व्यक्तिगत अनुभवों का प्रतिबिंब होती हैं, अपितु वे व्यापक सामाजिक-मानसिक परिवर्तनों का भी संकेत देती हैं।

विशेष रूप से 18 से 22 वर्ष का यह आयु-समूह वर्तमान शिक्षा-प्रणाली, रोजगार-परिदृश्य, तकनीकी विकास तथा सामाजिक अपेक्षाओं के प्रत्यक्ष प्रभाव में रहता है। यह वह वर्ग है जो नई संभावनाओं, नवाचारों और चुनौतियों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। अतः इनके विचारों में एक ओर आशा, आकांक्षा और प्रयोगधर्मिता दिखाई देती है, तो दूसरी ओर अस्थिरता, दबाव और अनिश्चितता भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इस कारण से इस आयु-वर्ग की प्रतिक्रियाएँ शोध के लिए अत्यंत प्रासंगिक और संवेदनशील मानी जाती हैं।

इस आयु-संरचना के कारण शोध के निष्कर्ष अधिक यथार्थपरक, संदर्भानुकूल एवं वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप बनते हैं, जिससे अध्ययन की उपयोगिता और प्रासंगिकता दोनों में वृद्धि होती है।

<u>युवाओं की दृष्टि में श्रीराम</u>

4. आप श्रीराम को किस रूप में अधिक जानते हैं ?
406 responses

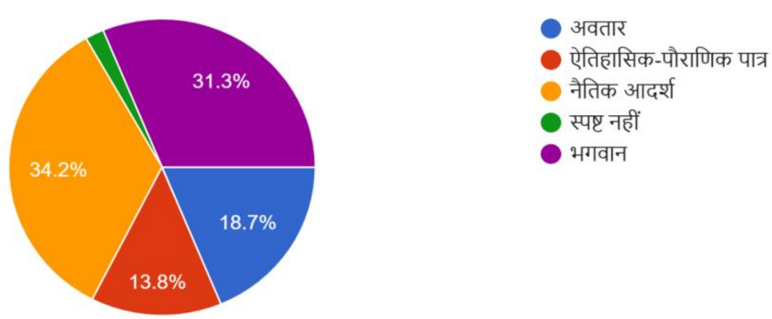

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़े दर्शाते हैं कि समकालीन युवा वर्ग में श्रीराम की छवि एक बहुआयामी स्वरूप में विद्यमान है। आँकड़ों के अनुसार, सर्वाधिक 34.2% उत्तरदाता उन्हें 'नैतिक आदर्श' के रूप में जानते हैं, जबकि 31.3% उत्तरदाता 'भगवान' के रूप में देखते हैं। 'अवतार' (18.7%) तथा 'ऐतिहासिक-पौराणिक पात्र' (13.8%) के रूप में उनकी स्वीकृति अपेक्षाकृत कम है, और 'स्पष्ट नहीं' की श्रेणी में बहुत ही अल्प (लगभग 2%) उत्तरदाता आते हैं।

इन आँकड़ों का सूक्ष्म परीक्षण करने पर यह स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं के बीच श्रीराम की पहचान केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं रह गई है, अपितु वह एक नैतिक मानदंड के रूप में भी स्थापित हो रही है। 'नैतिक आदर्श' के रूप में सर्वाधिक स्वीकृति यह दर्शाती है कि युवा वर्ग श्रीराम के चरित्र को जीवन-मूल्यों जैसे कर्तव्यनिष्ठा, मर्यादा, सत्य और त्याग के संदर्भ में ग्रहण कर रहा है। यह प्रवृत्ति इस बात की ओर संकेत करती है कि पारंपरिक आख्यानों का पुनर्पाठ अब अधिक व्यावहारिक और मूल्य-केन्द्रित दृष्टि से किया जा रहा है, जहाँ धार्मिक व्यक्तित्वों की प्रासंगिकता उनके नैतिक अर्थों में खोजी जा रही है।

इसके साथ ही, 'भगवान' और 'अवतार' के रूप में कुल मिलाकर लगभग आधे उत्तरदाताओं (लगभग 50%) द्वारा श्रीराम की स्वीकृति यह स्पष्ट करती है कि आस्था का आधार भी समान रूप से सशक्त बना हुआ है। यहाँ यह देखना महत्वपूर्ण है कि नैतिक दृष्टि और धार्मिक विश्वास परस्पर विरोधी नहीं हैं, अपितु एक-दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में उपस्थित हैं। अनेक उत्तरदाता संभवतः श्रीराम को एक साथ ईश्वर और आदर्श मानव - दोनों रूपों में स्वीकार करते हैं। इस प्रकार, एक प्रकार की द्विस्तरीय चेतना दिखाई देती है, जिसमें आस्था और व्यावहारिक नैतिकता का समन्वय है।

'ऐतिहासिक-पौराणिक पात्र' के रूप में 13.8% उत्तरदाताओं की दृष्टि भी उल्लेखनीय है, क्योंकि यह वर्ग अपेक्षाकृत तटस्थ और विवेचनात्मक दृष्टिकोण का परिचायक है। यह प्रवृत्ति इस ओर संकेत करती है कि कुछ उत्तरदाता श्रीराम को धार्मिक श्रद्धा के बजाय सांस्कृतिक-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास कर रहे हैं। यद्यपि यह प्रतिशत

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

बहुत अधिक नहीं है, फिर भी यह समकालीन बौद्धिक प्रवृत्तियों की उपस्थिति को रेखांकित करता है।

'स्पष्ट नहीं' की अत्यंत कम संख्या इस तथ्य को रेखांकित करती है कि श्रीराम की छवि भारतीय सांस्कृतिक मानस में अत्यंत स्पष्ट और सुदृढ़ रूप से स्थापित है। अधिकांश उत्तरदाता उनके संबंध में कोई न कोई निश्चित दृष्टिकोण रखते हैं, जो उनके व्यापक सांस्कृतिक प्रभाव का द्योतक है।

यह पूछने पर कि श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम क्यों कहा जाता है, युवाओं से बड़े रोचक उत्तर प्राप्त हुए। इस विषय में राम को ऐतिहासिक-पौराणिक चरित्र मानने वाले 20 वर्षीय शिव शंकर कुमार कहते हैं, "श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र (पुत्र, पति, भाई, राजा, मित्र) में नैतिकता, मर्यादा और धर्म के सर्वोच्च आदर्शों का पालन किया, कभी अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया और हर परिस्थिति में एक आदर्श मनुष्य के रूप में आचरण किया।"
कहा जा सकता है कि प्रस्तुत तथ्य श्रीराम की छवि को एकांगी न मानकर उसे एक समन्वित रूप में देखने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। युवा वर्ग के बीच उनकी स्वीकृति न केवल आस्था के स्तर पर है, अपितु जीवन-मूल्यों के प्रेरक स्रोत के रूप में भी है।
<u>रामायण/ रामचरितमानस के अध्ययन का प्रश्न</u>

7. क्या आपने कभी रामचरितमानस या वाल्मीकि रामायण का अध्ययन किया है ?
406 responses

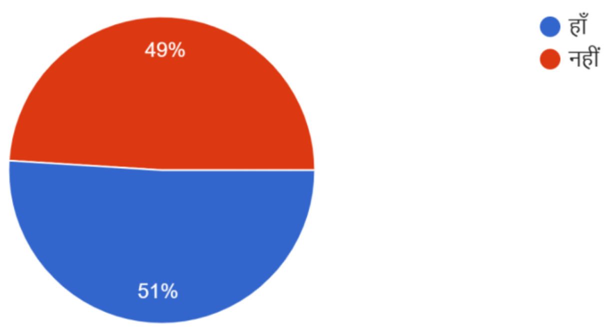

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

शोध में यह जानना भी आवश्यक था कि युवाओं में श्रीराम की जानकारी केवल सांस्कृतिक और पारिवारिक परंपरा तक सीमित है या वे मूल ग्रंथों से भी जुड़े हैं। इस प्रश्न के उत्तर में 51% उत्तरदाताओं द्वारा 'हाँ' कहा गया, जबकि 49% ने 'नहीं' कहा है। यह लगभग समतुल्य विभाजन एक विशेष प्रकार की सांस्कृतिक स्थिति की ओर संकेत करता है, जहाँ परंपरा की उपस्थिति और उससे दूरी, दोनों एक साथ विद्यमान हैं।

इन आँकड़ों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि यद्यपि आधे से अधिक उत्तरदाता रामायण-परंपरा के मूल ग्रंथों जैसे रामचरितमानस या वाल्मीकि रामायण से किसी न किसी स्तर पर परिचित हैं, तथापि लगभग समान अनुपात में एक ऐसा वर्ग भी उपस्थित है, जिसने इन ग्रंथों का प्रत्यक्ष अध्ययन नहीं किया है। यह स्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि भारतीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में रामकथा अत्यंत व्यापक रूप से प्रचलित है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सांस्कृतिक परिचय और ग्रंथाधारित अध्ययन के बीच एक स्पष्ट अंतर विद्यमान है।

इस प्रकार, प्रस्तुत आँकड़े दर्शाते हैं कि समकालीन युवा वर्ग में रामायण-परंपरा की उपस्थिति दो स्तरों पर बनी हुई है - एक, प्रत्यक्ष ग्रंथ-अध्ययन के रूप में; और दूसरा, सांस्कृतिक-सामूहिक स्मृति के रूप में। इन दोनों के बीच का यह संतुलन यह इंगित करता है कि परंपरा पूरी तरह से क्षीण नहीं हुई है, किंतु उसके ग्रहण के स्वरूप में परिवर्तन अवश्य आया है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वर्तमान समय में रामकथा की प्रासंगिकता बनी हुई है, परंतु उसके अध्ययन की प्रवृत्ति समान रूप से व्यापक नहीं है। यह स्थिति भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण संकेत देती है कि यदि सांस्कृतिक धरोहर के गहन अध्ययन को प्रोत्साहित करना है, तो उसे नए माध्यमों, सरल प्रस्तुतीकरण तथा शैक्षिक संरचनाओं के माध्यम से अधिक सुलभ और आकर्षक बनाया जाना आवश्यक होगा।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

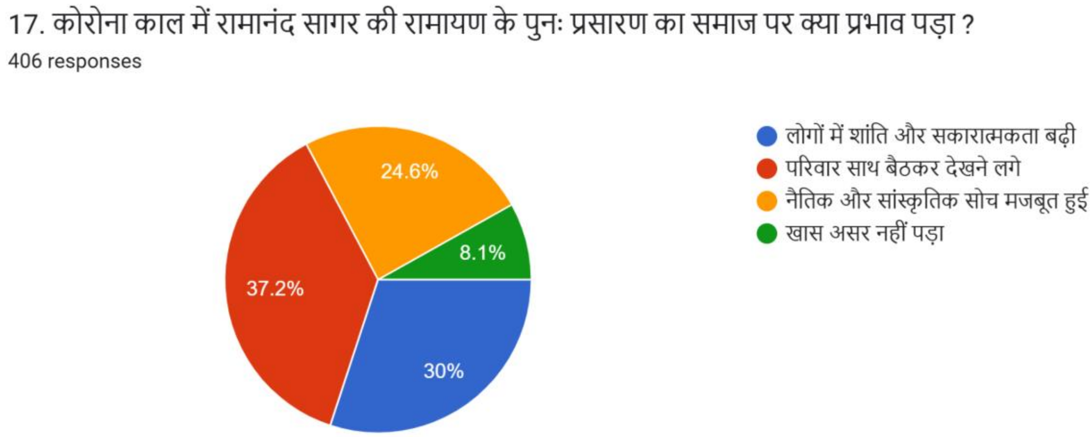

कोविड-19 महामारी के दौरान जब संपूर्ण देश लॉकडाउन की स्थिति में था, उस समय दूरदर्शन पर रामायण का पुनः प्रसारण किया गया, जिसने समाज पर गहरा सांस्कृतिक प्रभाव डाला। विशेष रूप से युवा पीढ़ी के लिए यह एक नया अनुभव था, जिसमें उन्होंने पहली बार या लंबे समय बाद इस महाकाव्य को देखा और उसके मूल्यों को समझा।

दैनिक भास्कर की एक खबर के अनुसार, "रामायण का पुनः प्रसारण अत्यंत लोकप्रिय रहा। 16 अप्रैल 2020 में इसके एक एपिसोड को लगभग 7.7 करोड़ (77 million) दर्शकों ने देखा, जिससे यह विश्व का सबसे अधिक देखा जाने वाला टीवी कार्यक्रम बन गया।"[5] यह आँकड़ा इस बात का प्रमाण है कि आधुनिक डिजिटल युग में भी पारंपरिक कथाओं और आदर्शों के प्रति लोगों की रुचि समाप्त नहीं हुई है।

इस प्रसारण का सामाजिक प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखा गया। लॉकडाउन के कारण परिवारों को एक साथ समय बिताने का अवसर मिला और रामायण ने इस समय को एक सांस्कृतिक अनुभव में बदल दिया। परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर इसे देखने लगे, जिससे पारिवारिक संवाद, जुड़ाव और नैतिक चर्चाएँ बढ़ीं।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

युवा वर्ग के संदर्भ में यह प्रभाव और भी महत्वपूर्ण रहा। सर्वेक्षण से प्राप्त संकेतों (जैसा कि प्रस्तुत ग्राफ़ में दर्शाया गया है) के अनुसार, अनेक युवाओं ने स्वीकार किया कि कोविड-19 के दौरान रामायण देखने से उनके भीतर नैतिक मूल्यों, पारिवारिक संबंधों और सांस्कृतिक चेतना के प्रति जागरूकता बढ़ी। इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि जब परंपरागत मूल्यों को सरल और सुलभ माध्यमों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, तो युवा पीढ़ी उन्हें सहज रूप से स्वीकार करती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि कोविड-19 काल में रामायण का पुनः प्रसारण केवल एक मनोरंजन कार्यक्रम नहीं रहा, अपितु यह एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम बना, जिसने युवाओं को अपनी जड़ों, परंपराओं और जीवन-मूल्यों से पुनः जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

<u>क्या आज का युवा श्रीराम के जीवन से प्रभावित है**?**</u>

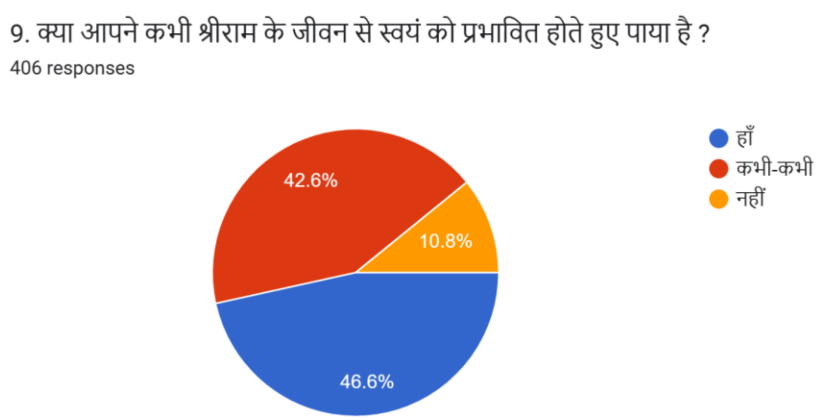

यह शोध का केंद्रीय प्रश्न है, क्योंकि इसी के माध्यम से यह निर्धारित होता है कि श्रीराम का जीवन आज की युवा पीढ़ी के लिए वास्तव में कितना प्रभावशाली है। सर्वेक्षण के अनुसार 46.6% उत्तरदाताओं ने स्पष्ट रूप से कहा कि वे श्रीराम के जीवन से प्रभावित हैं, जबकि

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

42.6% उत्तरदाताओं ने “कभी-कभी” विकल्प चुना। केवल लगभग 10% उत्तरदाताओं ने “नहीं” कहा।

इन आँकड़ों का सूक्ष्म विश्लेषण यह संकेत करता है कि यह प्रभाव एकरेखीय या स्थिर न होकर स्तरित और संदर्भानुकूल है। ‘हाँ’ का प्रतिशत उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ श्रीराम के जीवन-मूल्य - कर्तव्य, मर्यादा, धैर्य और त्याग - व्यक्तिगत आचरण में अपेक्षाकृत स्थिर प्रेरणा के रूप में उपस्थित हैं। दूसरे शब्दों में, यहाँ आदर्श केवल स्मृति का हिस्सा न होकर जीवन-निर्णयों को दिशा देने वाले सक्रिय तत्व हैं। इसके विपरीत, ‘कभी-कभी’ का उच्च प्रतिशत इस बात की ओर संकेत करता है कि समकालीन युवा जीवन में आदर्शों की उपस्थिति निरंतर नहीं, परिस्थितिजन्य है; वे विशेष प्रसंगों जैसे नैतिक द्वंद्व, संकट या प्रेरणा की आवश्यकता में अधिक स्पष्ट रूप से सक्रिय होते हैं। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि आज के युवाओं पर श्रीराम का प्रभाव स्थिर न होकर प्रसंगानुकूल सक्रिय होने वाली नैतिक चेतना के रूप में कार्य करता है।

यहीं से यह भी स्पष्ट होता है कि आधुनिक युवा आदर्शों को अस्वीकार करने के बजाय उन्हें अपने अनुभव-क्षेत्र में पुनःव्याख्यायित करता है। वह परंपरा को यथावत् ग्रहण न करके चयनात्मक रूप से आत्मसात करता है, जिससे आदर्शों का प्रभाव अनिवार्य अनुकरण के स्थान पर विवेकपूर्ण स्वीकार के रूप में सामने आता है। इस प्रकार, ‘कभी-कभी’ की श्रेणी केवल अनिश्चितता का संकेत नहीं, अपितु उस गतिशील चेतना की द्योतक है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच सतत संवाद बना हुआ है।

‘नहीं’ का अपेक्षाकृत अल्प प्रतिशत इस निष्कर्ष को और पुष्ट करता है कि श्रीराम की प्रासंगिकता व्यापक स्तर पर बनी हुई है। यह प्रभाव केवल धार्मिक आस्था का परिणाम नहीं है। यह सांस्कृतिक संरचना में उनकी गहरी अंतर्निहित उपस्थिति का परिचायक है। वस्तुतः श्रीराम की प्रासंगिकता आस्था तक सीमित नहीं रहती, अपितु जीवन के सूक्ष्म निर्णयों और नैतिक विकल्पों तक विस्तृत हो जाती है।

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

जब यह पूछा गया कि श्रीराम के जीवन-चरित्र से किस बात की प्रेरणा मिलती है, युवाओं ने ध्यान खींचने वाले उत्तर दिए। 22 वर्षीय अभिषेक मौर्या कहते हैं, "किसी भी परिस्थिति में हार नहीं माननी चाहिए तथा अपनी भावनाओं के साथ दूसरे की भावनाओं को भी समझना व उनका सम्मान करना चाहिए।"

मानव संसाधन प्रबंधन (HRM) की विद्यार्थी 20 वर्षीय तृप्ति आनंद का कथन महत्वपूर्ण है, "श्रीराम के जीवन से तनाव और कठिन परिस्थितियों से निपटने के लिए हमें आत्म-नियंत्रण, धैर्य, दृढ़ निश्चय, सकारात्मकता, जागरूकता आदि की सीख मिलती है।"

इसी क्रम में 21 वर्षीय रिदम शर्मा का कथन भी उल्लेखनीय है। वे राम से प्रेरित होते हुए कहते हैं, "हमें हर कार्य सूझबूझ से करना चाहिए और अपने रिश्तों को साथ लेकर चलना चाहिए, क्योंकि अकेले कोई भी काम संभव नहीं है।" इस प्रतिक्रिया से यह स्पष्ट होता है कि युवा वर्ग श्रीराम के जीवन से केवल व्यक्तिगत उत्थान की प्रेरणा ही नहीं, अपितु पारिवारिक सामंजस्य, सामूहिकता और संबंधों की मर्यादा जैसे व्यापक सामाजिक मूल्यों को भी ग्रहण कर रहा है।

17 वर्षीय आलोक त्रिपाठी का सरल किंतु प्रभावशाली कथन ध्यान खींचने वाला है, "समस्याएँ कितनी भी हों, हमें अंत तक हार नहीं माननी चाहिए।" स्पष्ट है कि राम का संघर्षशील चरित्र युवाओं में दृढ़ता और धैर्य की प्रेरणा उत्पन्न कर रहा है। विशेष रूप से कम आयु के युवाओं में इस प्रकार की सोच का विकसित होना इस बात का प्रमाण है कि ये आदर्श प्रारंभिक अवस्था से ही उनके मानस को प्रभावित कर रहे हैं।

वस्तुतः समकालीन युवा जीवन में श्रीराम एक स्थिर प्रतीक के रूप में नहीं, एक गतिशील नैतिक संदर्भ के रूप में विद्यमान हैं। उनका प्रभाव निरंतरता और परिस्थितिकता - दोनों के संतुलन से निर्मित होता है और यह संतुलन दर्शाता है कि भारतीय सांस्कृतिक आदर्श आज भी जीवित हैं, किंतु वे आधुनिक जीवन-स्थितियों के साथ नए अर्थों में संवाद करते हुए रूपांतरित हो रहे हैं।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

इन उदाहरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि युवा वर्ग श्रीराम के आदर्शों को केवल धार्मिक या सांस्कृतिक संदर्भ में न देखकर उन्हें अपने जीवन के व्यवहारिक निर्णयों, मानसिक संघर्षों और सामाजिक संबंधों में सक्रिय रूप से अपनाने का प्रयास कर रहा है।

इस प्रवृत्ति को सर्वेक्षण से इतर समाज में अन्य स्तरों पर भी देखा जा सकता है। अमर उजाला की एक खबर के अनुसार, दक्षिण अफ्रीका के स्पिन गेंदबाज केशव महाराज (आयु 36 वर्ष) ने यह स्वीकार किया कि जब भी वे मैदान में उतरते हैं, तो 'राम सिया राम' भजन उनके लिए आत्मविश्वास और आंतरिक शक्ति का स्रोत बनता है। उनके शब्दों में, "भगवान राम मेरे लिए सबसे बड़ी ताकत हैं... इससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ता है।"[6] स्पष्ट है कि श्रीराम केवल भारतीय युवाओं तक सीमित नहीं हैं, अपितु वे वैश्विक स्तर पर भी प्रेरणा का स्रोत बन रहे हैं।

इसी क्रम में यदि श्रीराम के जीवन का सम्यक् परीक्षण किया जाए, तो उनके व्यक्तित्व में अनुशासन, पितृभक्ति, वचनबद्धता, समावेशी दृष्टि तथा धैर्य और संघर्षशीलता जैसे गुण एक समन्वित नैतिक संरचना के रूप में उभरकर सामने आते हैं। ये गुण केवल उपदेशात्मक आदर्श नहीं हैं, अपितु उनके जीवन-व्यवहार में सजीव रूप में व्यक्त होते हैं; यही कारण है कि उनका प्रभाव आज भी अनुभवगत सत्य के रूप में स्वीकार किया जाता दिखता है।

द्रष्टव्य है कि राम का जीवन मर्यादा का चरम आदर्श है। वह प्रत्येक कार्य मर्यादा और विनम्रता के साथ करते थे। रामचरितमानस के अनुसार, राम की दिनचर्या कुछ ऐसे आरंभ होती थी -

"प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा॥
आयसु मागि करहिं पुर काजा। देखि चरित हरषई मन राजा॥"[7]

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

आधुनिक युवा के जीवन में समय-अनुशासन, बड़ों के प्रति आदर तथा दायित्व-निष्ठा से जो विचलन दिखाई देता है, उसे इस आदर्श के माध्यम से संतुलित किया जा सकता है।

अयोध्याकाण्ड में राम स्वयं कहते हैं—

"सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी।।
तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा।। "[8]

यह कथन स्पष्ट करता है कि राम के लिए माता-पिता की आज्ञा केवल सामाजिक कर्तव्य नहीं, अपितु जीवन का नैतिक आधार थी। आज जब युवा वर्ग स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय को महत्व देता है, तब यह आवश्यक है कि वह स्वतंत्रता के साथ पारिवारिक संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का संतुलन भी बनाए रखे।

दशरथ द्वारा वर्णित रघुकुल की परंपरा 'प्राण जाए पर वचन न जाई'[9] सत्यनिष्ठा का श्रेष्ठ उदाहरण है। दशरथ इसे कहते हैं, किंतु इसे चरितार्थ करने वाले राम हैं। यह मूल्य आज के 'विश्वास की कमी' वाले युग में युवाओं को अपनी विश्वसनीयता और चरित्र निर्माण में सहायक हो सकता है।

राम के चरित्र में वचन और धर्म का संबंध अत्यंत गहरा है। यह केवल एक पारिवारिक उक्ति नहीं, अपितु भारतीय जीवन-दर्शन का सार है। वर्तमान समय में जब संबंधों, वादों और सामाजिक विश्वास में निरंतर कमी दिखाई देती है, तब यह मूल्य युवा वर्ग के चरित्र-निर्माण के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक हो उठता है।

राम ने जाति और कुल के स्थान पर केवल भक्ति और प्रेम को महत्व दिया, जैसा कि शबरी प्रसंग में देखा जा सकता है—

"जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥"[10]

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

यह दृष्टिकोण आज के सामाजिक भेदभाव को मिटाने और समावेशी समाज के निर्माण में युवाओं के लिए प्रेरणादायक है।

शबरी प्रसंग में श्रीराम का दृष्टिकोण सामाजिक समावेशिता का अत्यंत ऊँचा आदर्श प्रस्तुत करता है। वे बाह्य पहचान, कुल, जाति और सामाजिक प्रतिष्ठा से अधिक भक्ति, भाव और आंतरिक पवित्रता को महत्व देते हैं। यह दृष्टि आधुनिक समाज में व्याप्त वर्ग, जाति, सामाजिक दूरी और मानसिक विभाजन को कम करने की प्रेरणा देती है।

आज का युवा एक ऐसे समाज में जी रहा है जहाँ भले ही पारंपरिक छुआछूत कम हुई हो, लेकिन आर्थिक स्थिति, 'सोशल मीडिया स्टेटस', विचारधारा और जीवन-शैली के आधार पर नए तरह के सामाजिक विभाजन पैदा हो गए हैं।

आज के युवाओं को श्रीराम से यह सीखना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके बाहरी आवरण से नहीं, अपितु उसके चरित्र और व्यवहार से किया जाना चाहिए। यह दृष्टि आधुनिक समाज में व्याप्त वर्ग-भेद और मानसिक विभाजन को कम करने की एक बड़ी प्रेरणा देती है।

एक अन्य प्रसंग भी हमें देखने के लिए मिलता है, जब राम लंका से अयोध्या वापस लौटने पर बंदर-भालुओं का अपने वरिष्ठ से परिचय करवाते हैं तो राम कहते हैं- "ये सब मेरे सखा हैं, संग्राम का सागर पार करने के लिए इन्होंने बेड़े का काम किया। इन्होंने मेरे लिए अपने जीवन की बाज़ी लगा दी। ये मुझे भारत से भी अधिक प्यारे हैं।"[11]

**"ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे। भए समर सागर कहं बेरे।
मम हित लागि जनम इन्ह हारे। भरतहुँ तें मोहि अधिक पियारे।।"[12]**

राम स्वयं से कमजोर और उपेक्षित वर्ग को भूले नहीं, अपितु उनको अपने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिया। वह गुण एक कुशल नेता के अंदर ही होते हैं। जो अपने साथ सभी

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

की साथ लेकर चलने की हिम्मत रखता है। यही कारण है की सभी ने राम की हर आज्ञा का पालन किया और उनके लिए अपने प्राण तक देने के लिए तैयार हो गए। वर्तमान समय में युवा अपने जगह अपनी सेवाएं देते हैं। हर जगह वो किसी न किसी रूप में एक समूह का नेतृत्व कर रहे होते हैं। वह एक आवश्यक पहलू है कि वह अपने साथ कार्य कर रहे लोगों का भी ध्यान रखें।

समकालीन समाज में स्त्री के प्रति दृष्टि और उसकी सुरक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक प्रश्न बन चुका है। आधुनिक युवा वर्ग में जहाँ एक ओर स्त्री-स्वतंत्रता, समानता और अधिकारों की बात की जाती है, वहीं दूसरी ओर स्त्रियों के साथ हिंसा, असुरक्षा और छेड़छाड़ की घटनाएँ भी निरंतर सामने आती रहती हैं। ऐसे समय में श्रीराम का स्त्री के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है।

रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में वर्णित जयंत प्रसंग इसका महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। जब इंद्रपुत्र जयंत ने कौए का रूप धारण कर माता सीता के चरणों में चोंच मारी, तब श्रीराम ने इसे केवल एक सामान्य घटना न मानकर स्त्री के सम्मान पर आघात के रूप में देखा और उसे दंडित किया—

“सीता चरन चोंच हति भागा।
मूढ़ मंदमति कारन कागा॥
चला रुधिर रघुनायक जाना।
सींक धनुष सायक संधाना॥”[13]

यह प्रसंग स्पष्ट करता है कि श्रीराम स्त्री की गरिमा और सम्मान के प्रति अत्यंत सजग थे तथा उसके विरुद्ध किसी भी प्रकार के दुर्व्यवहार को सहन नहीं करते थे।

इसी प्रकार श्रीराम का बालि के प्रति यह कथन स्त्री के संबंध में उनकी दृष्टि को और अधिक स्पष्ट करता है—

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

“अनुज बधू भगिनी सुत नारी।
सुनु सठ कन्या सम ए चारी॥
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई।
ताहि बधें कछु पाप न होई॥”[14]

इसका आशय यह है कि छोटे भाई की पत्नी, बहन, पुत्रवधू और कन्या - इन सभी को समान सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिए, और जो व्यक्ति इन पर कुदृष्टि डालता है, वह दंड का अधिकारी है।

स्पष्ट है कि श्रीराम का दृष्टिकोण केवल स्त्री के सम्मान तक सीमित नहीं था, अपितु वह स्त्री-सुरक्षा के प्रति भी सजग थे। वे केवल उपदेश नहीं देते, अपने आचरण द्वारा यह सिद्ध करते हैं कि समाज में स्त्रियों की गरिमा की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

वर्तमान युवाओं के संदर्भ में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि वह स्त्री को आकर्षण या उपभोग की वस्तु के रूप में न देखकर, एक सम्मानित और समान अधिकार वाले व्यक्ति के रूप में स्वीकार करे। डिजिटल युग में बढ़ती कुदृष्टि, ऑनलाइन उत्पीड़न और सामाजिक असुरक्षा की स्थितियों के बीच श्रीराम का यह दृष्टिकोण युवाओं को संयम, मर्यादा और सम्मानपूर्ण व्यवहार की प्रेरणा देता है।

डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं, “आदिकवि वाल्मीकि ने राम के शोकपूर्ण जीवन का भरपूर चित्रण किया है। किंतु, राम के शोक से महत्वपूर्ण राम का संघर्ष है। राम कहते हैं कि दैव ने मुझ पर विपत्तियाँ डालीं और मैंने उन विपत्तियों पर विजय प्राप्त की। “मानुषेण मया जित:” की सार्थकता राम को राम बनाती है। विपत्तियों को राम मनुष्य ने जीता। राम का रामत्व इसी सघर्षशीलता में है।”[15]

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

'उत्तर रामचरित' में राम के तीव्र अंतर्द्वंद्व एवं पीड़ा का चित्रण है। राम का जीवन यह सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी संतुलन नहीं खोना चाहिए। वनवास का प्रसंग इसका उत्कृष्ट उदाहरण है -

"भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू। बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू॥
जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा॥"[16]

यहाँ राम प्रतिकूल परिस्थिति को भी धैर्य और विवेक के साथ स्वीकार करते हैं। वे संकट को दुर्भाग्य नहीं, अपितु कर्तव्य-पालन का अवसर मानते हैं। आधुनिक युवा के लिए यह दृष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि आज असफलता, विलंब, प्रतियोगिता और अवसरों की कमी के कारण अनेक युवा मानसिक रूप से टूट जाते हैं। राम का यह आदर्श उन्हें परिस्थितियों से संघर्ष करने की आंतरिक शक्ति प्रदान कर सकता है।

वर्तमान समय में करियर की अंधी दौड़ में युवा अक्सर असफलता, विलंब और अवसरों की कमी का सामना करते हैं, जिसके कारण अनेक युवा मानसिक रूप से टूट जाते हैं। वनवास के प्रसंग को वर्तमान युवाओं के 'संघर्ष काल' के रूप में देखा जा सकता है। जब युवाओं को मनमुताबिक नौकरी नहीं मिलती या उनकी योजनाएँ विफल हो जाती हैं, तब अवसाद से घिरने के बजाय उन्हें श्रीराम की तरह धैर्य और विवेक से काम लेना चाहिए। राम का यह आदर्श युवाओं को सिखाता है कि सीमित संसाधनों के बीच भी अपनी क्षमताओं का विकास कैसे किया जाए और कठिन परिस्थितियों से लड़कर कैसे खुद को साबित किया जाए।

<u>आधुनिक युवा और मानसिक तनाव</u>

समकालीन युवा जीवन में मानसिक तनाव, अस्थिरता, चिंता और दबाव एक प्रमुख सामाजिक-मानसिक समस्या के रूप में उभरकर सामने आए हैं। सर्वेक्षण में जब उत्तरदाताओं से पूछा गया कि आज के युवाओं में मानसिक तनाव के प्रमुख कारण क्या हैं, तो अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह माना कि तनाव का कारण केवल एक नहीं, अपितु अनेक

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

हैं। 41.3% उत्तरदाताओं ने “ये सभी” विकल्प चुना, जिससे यह स्पष्ट होता है कि करियर का दबाव, पारिवारिक अपेक्षाएँ, सोशल मीडिया, तुलना की प्रवृत्ति, भविष्य की चिंता और प्रतिस्पर्धा - ये सभी मिलकर युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

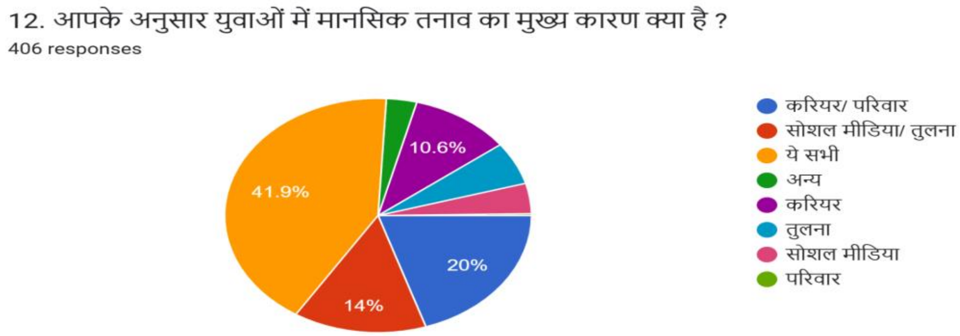

इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक युवा एक बहुआयामी संकट से गुजर रहा है। वह एक ओर सफलता की दौड़ में है, दूसरी ओर सामाजिक तुलना, डिजिटल प्रभाव, आर्थिक दबाव और भावनात्मक अस्थिरता से भी जूझ रहा है। ऐसे समय में किसी आदर्श जीवन-दृष्टि की आवश्यकता पहले से अधिक बढ़ जाती है।

मानसिक तनाव, आवेग और आंतरिक असंतुलन के संदर्भ में रामचरितमानस का यह कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय है-

“तात तीनि अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि बिग्यान धाम मन, करहिं निमिष महुँ छोभ॥”[17]

यहाँ काम, क्रोध और लोभ को मनुष्य के मन को विचलित करने वाली प्रमुख शक्तियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यदि इसे आधुनिक संदर्भ में देखें, तो सोशल मीडिया आधारित तुलना, अत्यधिक महत्वाकांक्षा, त्वरित सफलता की चाह, असंतोष और प्रतिक्रियात्मक व्यवहार - ये सभी उसी मानसिक विचलन के नए रूप हैं। इस प्रकार तुलसीदास की यह चेतावनी आज के युवा-जीवन में भी अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती है।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

यदि हम इस दर्शन को आज के डिजिटल युग के संदर्भ में देखें, तो 'काम' का अर्थ केवल वासना नहीं, अपितु हर भौतिक सुख को तुरंत पा लेने की बेलगाम इच्छा है। 'लोभ' आज सोशल मीडिया पर अधिक से अधिक लाइक्स, फॉलोअर्स और रातों-रात अमीर बनने की चाहत में बदल गया है। और जब ये इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं, तो वह 'क्रोध' और कुंठा का रूप ले लेती हैं। असंतोष, अत्यधिक महत्वाकांक्षा और प्रतिक्रियात्मक व्यवहार इसी मानसिक विचलन के नए रूप हैं। आधुनिक युवा एक बहुआयामी संकट से गुजर रहा है जहाँ वह सफलता की दौड़ और भावनात्मक अस्थिरता से जूझ रहा है। श्रीराम का आत्म-नियंत्रण और संयमित व्यवहार युवाओं को इस अंधी दौड़ से बाहर निकालकर मानसिक शांति और स्थिरता प्राप्त करने का मार्ग दिखाता है। यह बड़ा कारण है कि उत्तरदाताओं में अधिकांश युवा किसी न किसी रूप में श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेते पाए गए हैं।

मानसिक तनाव की स्थिति में श्रीराम के आदर्शों का महत्व

जब युवाओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या मानसिक दबाव अथवा कठिन परिस्थितियों में किसी आदर्श चरित्र के मूल्यों को अपनाना युवाओं के लिए सहायक हो सकता है, तो प्राप्त आँकड़े इस अध्ययन के लिए अत्यंत सार्थक दिशा प्रदान करते हैं। 66.3% उत्तरदाताओं ने स्पष्ट रूप से 'हाँ' कहा, 23.3% ने 'कभी-कभी' का विकल्प चुना, जबकि केवल 6.3% उत्तरदाताओं ने इसे अस्वीकार किया। इस प्रकार लगभग 89% उत्तरदाता किसी न किसी स्तर पर इस बात से सहमत हैं कि आदर्श चरित्रों के मूल्य मानसिक संघर्ष की स्थितियों में सहायक हो सकते हैं।

इन आँकड़ों का विश्लेषण यह संकेत करता है कि समकालीन युवा वर्ग मानसिक स्वास्थ्य और आंतरिक संतुलन के प्रश्नों के प्रति सजग है और वह इन समस्याओं के समाधान हेतु केवल बाह्य साधनों पर निर्भर न रहकर मूल्य-आधारित मार्गों की भी संभावनाओं को स्वीकार करता है। 'हाँ' का उच्च प्रतिशत यह दर्शाता है कि एक बड़ा वर्ग आदर्श चरित्रों को जीवन की कठिन परिस्थितियों में मार्गदर्शक शक्ति के रूप में देखता है। यह स्वीकृति इस

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

बात की ओर संकेत करती है कि नैतिक आदर्श केवल सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा नहीं हैं; वे मनोवैज्ञानिक संबल के रूप में भी कार्य कर सकते हैं।
'कभी-कभी' का उल्लेखनीय प्रतिशत इस तथ्य को रेखांकित करता है कि आदर्शों की उपयोगिता को पूर्णतः नकारा नहीं गया है, अपितु उसे परिस्थितिजन्य रूप में अनुभव किया जाता है। आधुनिक जीवन की जटिलताओं, प्रतिस्पर्धा और तात्कालिक दबावों के बीच आदर्शों का प्रभाव निरंतर सक्रिय नहीं रह पाता, किंतु संकट के क्षणों में वे एक आंतरिक सहारे के रूप में उभरते हैं। इस प्रकार, यहाँ भी आदर्शों का स्वरूप स्थिर न होकर संदर्भानुकूल दिखाई देता है।

'नहीं' का न्यूनतम प्रतिशत यह दर्शाता है कि आदर्शों की उपयोगिता के प्रति पूर्ण असहमति बहुत सीमित है। यह तथ्य इस व्यापक निष्कर्ष को पुष्ट करता है कि युवा वर्ग के भीतर मूल्य-आधारित जीवन-दृष्टि के लिए अभी भी पर्याप्त स्थान बना हुआ है।

'लोकवादी तुलसीदास' से का यह कथन द्रष्टव्य है, "अकेलेपन की भावना एक प्रकार के निर्वासन की भावना है।"[18] इस दृष्टि से देखा जाए तो श्रीराम का जीवन केवल धार्मिक आख्यान नहीं, अपितु मानवीय अनुभवों का गहन मनोवैज्ञानिक रूपक भी है। वनवास, परिवार-वियोग, राज्य-त्याग और निरंतर संघर्ष ये सभी प्रसंग उस 'निर्वासन' की अनुभूति को व्यक्त करते हैं, जिससे आज का युवा भी भिन्न-भिन्न रूपों में गुजरता है, चाहे वह सामाजिक अलगाव हो, असफलता का दबाव हो या आंतरिक द्वंद्व।

इन परिस्थितियों में श्रीराम का आचरण विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो उठता है। धैर्य, संयम, आत्म-नियंत्रण, कर्तव्यनिष्ठा और संतुलन केवल नैतिक गुण नहीं, मानसिक स्थिरता के आधार-तत्व हैं। श्रीराम विपरीत परिस्थितियों में विचलित नहीं होते, अपितु उन्हें धैर्यपूर्वक स्वीकार कर अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हैं। इस प्रकार उनका जीवन यह संकेत देता है कि संकट केवल बाहय नहीं होते, उनका समाधान भी आंतरिक संतुलन में निहित होता है।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

अतः यह कहा जा सकता है कि आदर्श चरित्रों, विशेषतः श्रीराम, का महत्व आधुनिक संदर्भ में सांस्कृतिक-धार्मिक सीमा को लांघकर मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक स्तर पर भी प्रासंगिक हो उठता है। वे युवा वर्ग को यह बोध कराते हैं कि कठिन परिस्थितियों में भी संयम, धैर्य और मूल्यनिष्ठा बनाए रखना संभव है। इस प्रकार, श्रीराम का जीवन आज के मानसिक तनाव और अनिश्चितताओं से जूझते युवा के लिए केवल प्रेरणा का स्रोत भर नहीं रह जाता, अपितु आंतरिक शक्ति और संतुलन का एक सशक्त आधार भी प्रदान करता है।

<u>आधुनिक व्यस्तता और पारिवारिक दायित्वों से दूरी</u>

आधुनिक जीवन की व्यस्तता, करियर-केन्द्रित सोच और दौड़ती-भागती जीवनशैली ने पारिवारिक संबंधों और दायित्वों को किस हद तक प्रभावित किया है, यह प्रश्न शोध की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। इस प्रश्न के उत्तर में 80.8% उत्तरदाताओं ने माना कि आधुनिक व्यस्तता के कारण युवा पारिवारिक दायित्वों से दूर हो रहे हैं, जबकि केवल 19.2% उत्तरदाताओं ने इससे असहमति व्यक्त की।

16. क्या आधुनिक जीवन-शैली और व्यस्तता ने युवाओं को पारिवारिक कर्तव्यों से दूर किया है ?
406 responses

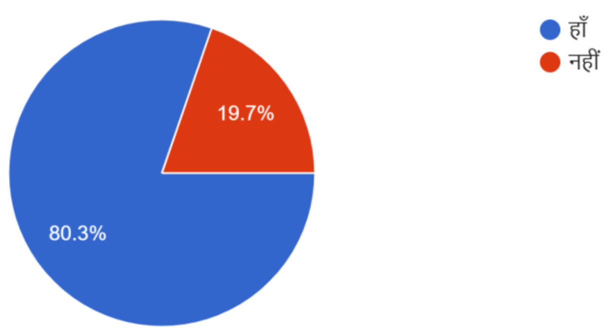

स्पष्ट होता है कि वर्तमान युवा स्वयं यह अनुभव करता है कि आधुनिक जीवन की भागदौड़, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, समयाभाव और तकनीकी विचलन के कारण परिवार, संबंध, बड़ों के प्रति दायित्व और भावनात्मक जुड़ाव कमजोर हो रहे हैं।

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

ऐसी स्थिति में श्रीराम का जीवन विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि वे आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति और आदर्श परिवार-निष्ठ व्यक्ति के रूप में स्थापित हैं। उन्होंने व्यक्तिगत सुख से अधिक पारिवारिक मर्यादा और दायित्व को महत्व दिया। अतः यह स्पष्ट है कि आज के सामाजिक विघटन और पारिवारिक दूरी के दौर में श्रीराम का पारिवारिक आदर्श युवाओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

<u>बदलते समाज में निष्ठा और मर्यादा की प्रासंगिकता</u>

"कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाखंड,
दहन रामगुनग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड।।"[19]

अर्थात् कलियुग में कुपंथ, कुतर्क, कपट, कुचाल, दम्भ और पाखंड की जो व्यापकता है, उसे नष्ट करने के लिए श्रीराम के गुण प्रचण्ड अग्नि और ईंधन के समान कार्य करते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में, इस शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह समझना भी था कि आधुनिकता, वैश्वीकरण, व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा बदलते सामाजिक संबंधों के बीच निष्ठा और मर्यादा जैसे पारंपरिक मूल्य आज भी किस सीमा तक स्वीकार्य और प्रासंगिक हैं। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार 46.3% उत्तरदाताओं ने इन मूल्यों को 'अत्यंत महत्वपूर्ण' माना। इसके अतिरिक्त एक उल्लेखनीय वर्ग ने इन्हें परिस्थितिनिष्ठ या आंशिक रूप से महत्वपूर्ण स्वीकार किया। यद्यपि यह स्वीकृति सभी में समान रूप से नहीं है, तथापि समग्र प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि इन मूल्यों की आवश्यकता को व्यापक स्तर पर नकारा नहीं गया है।

इन आँकड़ों का विश्लेषण यह संकेत करता है कि समकालीन युवा वर्ग एक ओर जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और आधुनिक जीवन-शैली को स्वीकार कर रहा है, वहीं दूसरी ओर वह यह भी अनुभव करता है कि केवल स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है; उसे संतुलित करने के लिए कुछ स्थायी नैतिक आधार भी आवश्यक हैं। निष्ठा और मर्यादा ऐसे ही मूल्य हैं, जो संबंधों में स्थायित्व, व्यवहार में संयम और निर्णयों में संतुलन प्रदान करते हैं। इस

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

प्रकार, आधुनिकता और परंपरा के बीच कोई सीधा विरोध नहीं दिखाई देता, अपितु एक प्रकार का संतुलन-स्थापन उभरकर सामने आता है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि 46.3% का 'अत्यंत महत्वपूर्ण' कहना केवल सांख्यिकीय तथ्य न होकर मूल्य-चेतना की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। यह उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो मानता है कि सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन की जटिलताओं के बीच भी कुछ मूलभूत आदर्शों का होना अनिवार्य है। वहीं, जो उत्तरदाता इन्हें 'परिस्थितिनिष्ठ' मानते हैं, वे भी इन्हें पूर्णतः अस्वीकार करने के बजाय उनके प्रयोग को संदर्भ के अनुसार सीमित या परिवर्तित रूप में स्वीकार करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि मूल्य पूरी तरह समाप्त नहीं हो रहे, अपितु उनका स्वरूप अधिक लचीला और व्यावहारिक होता जा रहा है।

इस संदर्भ में उद्धृत दोहे का अर्थ और भी प्रासंगिक हो उठता है। यदि कलियुग की प्रवृत्तियाँ - कपट, दंभ, पाखंड - आज के सामाजिक और मानसिक संकटों का प्रतीक हैं, तो श्रीराम के गुण - निष्ठा, मर्यादा, सत्यनिष्ठा और कर्तव्यबोध - उनके प्रतिरोध के साधन के रूप में देखे जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में, जहाँ मूल्य-संकट है, वहीं आदर्शों की आवश्यकता और अधिक तीव्र हो जाती है।

यह परिणाम इस धारणा को खंडित करता है कि आधुनिक युवा पूरी तरह से पारंपरिक मूल्यों से कट चुका है। वस्तुतः युवा वर्ग आधुनिक जीवन की स्वतंत्रता चाहता है, परंतु साथ ही वह यह भी समझता है कि बिना निष्ठा, मर्यादा, विश्वास, आत्म-संयम और संबंधों की पवित्रता के जीवन में स्थिरता संभव नहीं है।

वास्तव में श्रीराम का चरित्र केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, अपितु जीवन-प्रबंधन की एक सशक्त पद्धति है। उनके व्यक्तित्व में धैर्य, निर्णय क्षमता, संवाद की मर्यादा, संबंधों के प्रति संवेदनशीलता और संकट में संतुलन जैसे गुण विद्यमान हैं। आज का युवा यदि इन मूल्यों को व्यावहारिक स्तर पर अपनाए, तो वह न केवल व्यक्तिगत तनाव को कम कर

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

सकता है, अपितु अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अधिक उत्तरदायी नागरिक भी बन सकता है।

निष्कर्ष

आधुनिक युवा आज अभूतपूर्व अवसरों के साथ-साथ अनेक चुनौतियों का भी सामना कर रहा है। ऐसे समय में श्रीराम का जीवन एक ऐसे आदर्श की स्थापना करता है, जो केवल उपदेश नहीं देता, अपितु अपने आचरण के माध्यम से जीवन जीने की सही दिशा प्रदान करता है। श्रीराम का व्यक्तित्व इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि जीवन में बाहरी उपलब्धियाँ जितनी आवश्यक हैं, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण आंतरिक स्थिरता, धैर्य, मर्यादा और नैतिक चेतना है। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी संतुलन नहीं खोया, संबंधों को स्वार्थ से ऊपर रखा, कर्तव्य को अधिकार से अधिक महत्व दिया तथा संघर्ष को जीवन का स्वाभाविक अंग मानकर उसका सामना किया। यही कारण है कि उनका जीवन आज भी प्रासंगिक है और युवा वर्ग के लिए प्रेरणा का शाश्वत स्रोत बना हुआ है।

प्रस्तुत सर्वेक्षण आधारित अध्ययन यही संकेत करता है कि आज का युवा स्वयं भी इस मूल्य-संकट को अनुभव करता है। बड़ी संख्या में युवाओं ने मानसिक तनाव, पारिवारिक दूरियों, सामाजिक दबाव और भविष्य की अनिश्चितताओं को अपनी प्रमुख समस्याओं के रूप में स्वीकार किया। साथ ही, यह भी सामने आया कि आदर्श चरित्रों, विशेषकर श्रीराम के जीवन-मूल्यों, को अपनाने से इन समस्याओं का समाधान संभव है। यह इस बात का संकेतक है कि युवा पीढ़ी केवल भौतिक सफलता ही नहीं, अपितु जीवन में दिशा, संतुलन और अर्थ भी खोज रही है। यदि आज का युवा श्रीराम के गुणों जैसे प्रतिकूल परिस्थितियों में अडिग रहना, संवाद में मधुरता, निर्णय में विवेक, संबंधों में निष्ठा, कर्तव्यों के प्रति समर्पण तथा जीवन में मर्यादा को अपने व्यवहार का हिस्सा बनाता है, तो वह न केवल व्यक्तिगत रूप से अधिक सशक्त, संतुलित और सफल बन सकता है, अपितु परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी सार्थक योगदान दे सकता है।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

अतः कहा जा सकता है कि राम का चरित्र और उनकी कथा केवल सांस्कृतिक या धार्मिक विमर्श तक सीमित नहीं है, अपितु यह समकालीन सामाजिक, नैतिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक है। वास्तव में, श्रीराम का जीवन आज के युवा के लिए अतीत की स्मृति नहीं, अपितु वर्तमान की आवश्यकता और भविष्य की दिशा है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसी, राधाकृष्ण पेपरबैक्स पृष्ठ - 18
2. पूर्वोक्त, पृष्ठ - 87
3. पूर्वोक्त
4. पूर्वोक्त, पृष्ठ सं० 37
5. https://www.bhaskar.com/amp/entertainment/tv/news/ramayana-became-the-world-most-watched-show-created-a-world-record-with-77-million-viewers-on-16th-april-127263175.html
6. https://www.amarujala.com/web-stories/cricket/cricket-news/why-is-ram-siya-ram-played-as-soon-as-keshav-maharaj-comes-on-the-field-know-here-disprj-2024-01-09
7. तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड, गीताप्रेस, पृष्ठ - 176
8. पूर्वोक्त, अयोध्याकाण्ड,गीताप्रेस, पृष्ठ - 339
9. पूर्वोक्त, 27.4
10. पूर्वोक्त, अरण्यकाण्ड, गीताप्रेस, 611
11. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसी, राधाकृष्ण पेपरबैक्स पृष्ठ सं० 34
12. पूर्वोक्त
13. तुलसीदास, रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, गीताप्रेस पृष्ठ सं० 567
14. पूर्वोक्त, किष्किंधाकाण्ड, गीताप्रेस पृष्ठ सं० 535
15. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसी, राधाकृष्ण पेपरबैक्स पृष्ठ सं० 18
16. रामचरितमानस,अयोध्याकाण्ड,गीताप्रेस पृष्ठ सं० 340
17. पूर्वोक्त, अरण्यकाण्ड, गीताप्रेस पृष्ठ सं० 615

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue:2
May 2026
Impact Factor:11.9
Subject: Hindi Literature

18. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसी, राधाकृष्ण पेपरबैक्स पृष्ठ सं० 92
19. पूर्वोक्त, पृष्ठ सं० 86

Author’s Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

पीयूष कुमार दुबे
डॉ. विनय विश्वास
चिराग वर्मा
तुषार
रोहन कुमार
करिश्मा
लोकेश
राज पटेल

******